ॐ

श्री सम्मेदशिखर विधान

रचयिता
मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक
जैनोदय विद्या समूह

कृति : श्री सम्मेद शिखर विधान

आशीर्वाद : आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

कृतिकार : मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

संयोजक : बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

प्रसंग : १. ५०वाँ मुनिदीक्षा संयम स्वर्ण महोत्सव
२. मुनिश्री का १९वाँ वर्षायोग उत्सव

संस्करण : प्रथम, २०१७

सहयोग राशि : १०/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

प्राप्ति स्थान : बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
९४२५१-२८८१७
सौरभ जैन कडेसरा
९७९५२-६०१०६

मुद्रक :

❋ प्रकाशन सहयोगी ❋

श्री सम्मेदशिखर विधान

स्थापना (दोहा)

श्री सम्मेदशिखर रहा, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
करके नमोस्तु अर्चना, हम चाहें कल्याण॥

(शंभु)

जय सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर, कुल रहे एक सौ सत्तर जो।
निर्वाण तीर्थ शाश्वत इससे, प्रभु गये अनन्तों शिवपुर को॥
हम वहाँ नहीं तुम यहाँ नहीं, फिर कैसे मिलन हमारा हो।
सो हम पूजें सम्मेदशिखर, अब आवागमन तुम्हारा हो॥

(सोरठा)

हम करते आह्वान, सिद्ध भूमि हर सिद्ध को।
हृदय वसो भगवान्, भक्तों को सान्निध्य दो॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

(शंभु)

सम्मेदशिखर गिरि पर पाते, जो जन्म मरण के शुभ अवसर।
कल्याण सुनिश्चित हैं उनके, जिनके दिल में सम्मेदशिखर॥
वे जन्म मृत्यु के दुख हरके, शुद्धातम का जल खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

सम्मेदशिखर की भाव सहित, जो करें वंदना यात्रायें।
तिर्यंच नरक गति दुख न उन्हें, नर देव सुखों को वे पायें॥
संसार ताप का चक्र हरें, शीतल शुद्धातम खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं...।

सम्मेदशिखर को तहस-नहस, कितना करलो ये हिल न सकें।
हैं मिट्टी पत्थर के अक्षत, सचमुच मिट्टी में मिल न सकें॥
ले इसकी रज तन मिट्टी में, हम चेतन मूरत खोज रहे।

सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

सम्मेदशिखर के मण्डप में, कई हुए स्वयंवर आतम के।
सो मुक्तिवधू की चाहत में, सम्मेदशिखर हम आ धमके॥
लेकर पुष्पों की वरमाला, चारित्र पुष्प हम खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सम्मेदशिखर के कण-कण को, मुनि उपवासों से शुद्ध करें।
कुछ लोग न चढ़ते सो इस पर, कुछ भूखे-प्यासे तीर्थ करें॥
सम्मेदशिखर के भोजन में, हम स्वाद मोक्ष का खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...

सम्मेदशिखर के दर्शन तो, बस भव्य प्राणियों को होते।
कुछ इस पर चढ़ने के पहले, अंधे से होकर के रोते॥
हम करें आरती चरणों की, निज नयना-दीपक खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं...

सम्मेदशिखर की धूल करे, जग-पर्यावरण विशुद्ध सदा।
हों कर्मभूत सब दूर यहाँ, दुख रोग शोक ना टिकें कदा॥
हर एक शिला में सिद्धशिला, हम धूप चढ़ाकर खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

सम्मेदशिखर के भाव सहित, जो दर्शन पूजन तीर्थ करें।
कई उपवासों का फल पाके, घर ऋद्धि-सिद्धि से पूर्ण भरें॥
फल-फूल यहाँ सब औषध हैं, हम स्वस्थ चेतना खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

हैं सम्मेदशिखर महा, तीर्थराज गुणधाम।
नमोस्तु कर जयमालिका, भक्त कहें धर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

तीन लोक के मध्य भाग में, मध्यलोक विख्यात रहा।
जम्बु-धातकी पुष्करार्द्ध ये, जिनको ढाई द्वीप कहा॥
जहाँ अधिकतम रहे शिखरजी, पूरे एक शतक सत्तर।
शाश्वत इस निर्वाण धरा से, गये अनन्तों मुनि शिवपुर॥१॥

तथा अनन्तों तीर्थंकर भी, तीन काल में शिव जाते।
सो तीर्थों का तीर्थ इसी को, देवशास्त्र गुरु बतलाते॥
इनके अणु परमाणू के तो, सीधे सिद्धों से रिश्ते।
अतः यहाँ पर्वत झरनों से, सिद्ध गीत जैसे रिसते॥२॥

बियावान जंगल में पक्षी, कलरव करके सिद्ध भजें।
नीची घाटी ऊँचे पर्वत, वृक्ष लतायें सिद्ध भजें॥
हाथी बन्दर लंगूरों से, तहस-नहस यों पर्वत हो।
ज्यों मुनियों के योग ध्यान से, कर्मों का वन आहत हो॥३॥

वर्तमान के बीस जिनेश्वर, मोक्ष यहाँ से जा बैठे।
तभी भक्त हम टोंक वंदना, करने भाव सजा बैठे॥
सूर्योदय सम कुन्थुनाथ की टोंक ज्ञानधर कूट रही।
नमीनाथ की कूट मित्रधर, अर की नाटक कूट रही॥४॥

संवर कूट मल्लि जिनवर की, श्रेयांस प्रभु की सुंकुल है।
पुष्पदंत की सुप्रभ प्यारी, पद्मप्रभू की मोहन है॥

मुनिसुव्रत की निर्जर न्यारी, ललितकूट प्रभु चन्द्र की।
शीतल प्रभु की विद्युतवर है, कूट स्वयंभू अनंत की॥५॥
धवल कूट है शंभव प्रभु की, अभिनंदन प्रभु की आनंद।
सुदत्तवर है धर्मनाथ की, सुमतिनाथ की अविचल कूट॥
शांतिनाथ की कूट कुन्दप्रभ, प्रभास है सुपार्श्व प्रभु की।
विमलनाथ की सुवीर सुन लो, सिद्धवर कूट अजित प्रभु की॥६॥
संध्या जैसी पार्श्वनाथ की, स्वर्णभद्र की अंतिम है।
दर्शन कर यों लगता जैसे, कष्टों का दिन अंतिम है॥
यहीं आदि की वासुपूज्य की, वीर नेमि की कूट रही।
काल दोष से अन्य जगह से, मोक्ष गये पर टोंक यहीं॥७॥
श्री सम्मेदशिखर के वैभव, कोई भी ना बाँध सके।
कौन माई का जाया है जो, इसके वैभव वाँच सके॥
फिर भी जो गुणगान किये हम, इसका केवल यह उद्देश्य।
जो भी मोक्ष यहाँ से पहुँचे, उन जैसे हम पायें देश॥८॥
श्री सम्मेदशिखर पूजा कर, मात्र पुण्य ये अर्जित हों।
पुण्यफला अरिहंता हों हम, सारे पाप विसर्जित हों॥
योग त्याग फिर बने अयोगी, फिर सम्मेदशिखर पर आ।
'सुव्रत' सिद्धालय को पायें, निज सम्मेदशिखर को पा॥९॥

(सोरठा)

सम्मेदाचल पूज, धन्य किये निज पुण्य को।
सिद्ध स्वपद हम खोज, पायें निज चैतन्य को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर विधान अर्घ्यावली

(ज्ञानोदय)

१. गणधर कूट

आदिप्रभु से वीरप्रभु के, चौदह सौ उनसठ गणधर।
वृषभसेन से प्रभासस्वामी, गये यहीं से लोक शिखर॥

गणधर कूट अतः प्रसिद्ध है, जिनके पद पूजें आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-गणधरकूटात् मुक्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरसंबंधी-समस्त गणधरेभ्यो अर्घ्यं...।

२. ज्ञानधर कूट

प्रथम ज्ञानधर कूट यहीं से, कामदेव चक्री जिननाथ।
कुन्थुनाथ जी मोक्ष पधारे, जब शुक्ला एकम वैसाख॥
कोटि-कोटि मुनि इसी ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-
कूटात् मुक्त मुनिवरेभ्यो कूट से, बने भेद ज्ञानी आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-ज्ञानधरकूटात् मुक्त श्री कुंथुनाथादि छयावने कोड़ाकाड़ी छयानवेकरोड़ बत्तीसलाख छयानवे हजार सात सौ बयालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

३. मित्रधर कूट

कूट मित्रधर से नमि जिनवर, ध्यान धार निर्ध्यान हुये।
चतुर्दशी वैसाख कृष्ण को, आतम शुद्ध स्वभाव छुये॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, सिद्ध स्वपद पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-मित्रधरकूटात् मुक्त श्रीनेमिनाथादि नौ कोड़ाकोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बयालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

४. नाटक कूट

नाटक कूट यहाँ से चक्री, कामदेव अर-जिन तीर्थेश।
चैत्र अमावस को शिव पाये, शुद्ध बना निज आत्म प्रदेश॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, सिद्ध शिला पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-नाटककूटात् मुक्त श्री अरनाथादि निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

५. संवल (संवर) कूट

संवलकूटधाम से जिनवर, मल्लिनाथ जी मुक्त हुये।
फाल्गुन कृष्ण पंचमी पाकर, भक्त भक्ति में युक्त हुये॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, मोहमल्ल मारे आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-संवलकूटात् मुक्त श्रीमल्लिनाथादि छयानवे करोड़ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

६. संकुल कूट

संकुल पूज्य कूट से पाये, श्री श्रेयांसनाथ जी मोक्ष।
श्रावण पूनम धन्य हो गयी, वीतरागियों का सुन सौख्य॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, पा बैठे शिवकुल आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-संकुलकूटात् मुक्त श्री श्रेसांसनाथादि छयानवे कोड़ाकोड़ी छयानवे करोड़ छयानवे लाख नौ हजार पाँच सौ बयालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

७. सुप्रभ कूट

सुप्रभकूट से सुविधि प्रभु जी, मोक्षमार्ग की सुविधि बता।
शुक्ल अष्टमी भाद्रपक्ष में, हरे कर्म की व्यथा-कथा॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, ज्ञान महल पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-सुप्रभकूटात् मुक्त श्री पुष्पदंतादि एक कोड़ाकोड़ा निन्यानवे लाख सात हजार सात सौ अस्सी मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

८. मोहन कूट

मोहन कूट यहीं से जिनवर, पूज्य पद्मप्रभु सिद्ध हुये।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी पाकर, शुद्ध-बुद्ध अविरुद्ध हुये॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, कुन्दन से चमके आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-मोहनकूटात् मुक्त श्रीपद्मनाथादि निन्यानवे

करोड़ सत्तासी लाख तैंतालीस हजार सात सौ सत्तावन मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

९. निर्जर कूट

नौवीं निर्जर कूट यहीं से, मुनिसुव्रत प्रभु मोक्ष गये।
फाल्गुन कृष्णा बारस के दिन, मुक्तिवधू के लोक गये॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, संकट कष्ट हरे आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-निर्जरकूटात् मुक्त श्रीमुनिसुव्रतनाथादि निन्यानवे कोड़ाकोड़ी निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख नौ सौ निन्यानवे मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१०. ललित कूट

ललित कूट से चन्द्रप्रभु जी, चित् चैतन्य चिदेश हुए।
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को प्रभु, अष्टम भू के देश छुए॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, चन्द्र शिला पायें आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-ललितकूटात् मुक्त नौ सौ चौरासी अरब बारह करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पाँच सौ पंचानवे मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

११. सर्वसिद्धवर कूट

अष्टापद से मुक्त आदि जिन, माघ कृष्ण की चौदश को।
फिर भी कूट शिखर पर शोभित, पूज्य सिद्धवर पूजित हों॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कुट से, जग जंजाल हरे आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टापदकैलाश-सिद्धक्षेत्र-सर्वसिद्धवरकूटात् मुक्त श्रीवृषभनाथ-बाल-महाबाल-नागकुमारादि दस हजार मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१२. विद्युतवर कूट

विद्युतवर की पूज्य कूट से, शीतलनाथ गये शिवधाम।
आश्विन शुक्ल अष्टमी पाकर, तीर्थवंदना करें प्रणाम॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, बने निजानंदी आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-विद्युतवरकूटात् मुक्त श्रीशीतलनाथादि अठारह कोड़ाकोड़ी बयालीस करोड़ बत्तीस लाख बयालीस हजार नौ सौ पाँच मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१३. स्वयंभू कूट

कूट स्वयंभू से अनंतप्रभु, अनंत कर्मों को त्यागे।
चैत्र अमावस को पा निज रस, सिद्ध चासनी में पागे॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, निजानुभव पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-स्वयंभूकूटात् मुक्त श्रीअनंतनाथादि छयानवे कोड़ाकोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१४. धवल कूट

धवलकूट से शंभवप्रभु जी, निजरमणी के राज बने।
चैत्र शुक्ल छठ को निजघट पा, तारणतरण जहाज बने॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, भव जल पार किये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-धवलकूटात् मुक्त श्रीशंभवनाथादि नौ कोड़ाकोड़ी बारह लाख बयालीस हजार पाँच सौ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१५. वासुपूज्य कूट

चम्पापुर मन्दार गिरी से, प्रथम बालयति ईश हुये।
भाद्रशुक्ल चौदस के दिन को, वासुपूज्य सिद्धीश हुये॥
अनेक मुनि भी यहीं मुक्त हो, मुक्तिमहल पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चंपापुर-सिद्धक्षेत्र-मंदारगिरि-कूटात् मुक्त श्रीवासुपूज्यादि एक हजार मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१६. आनंद कूट

शुभ आनंद कूट से जिनवर, अभिनंदन प्रभु मोक्ष गये।
छठ वैसाख शुक्ल को अनुपम, सहजानंदी धाम गये॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, निजानंद पाये आहा।

अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-आनंदकूटात् मुक्त श्रीअभिनंदननाथादि बहत्तर कोड़ाकोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख बयालीस हजार सात सौ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१७. सुदत्तवर कूट

सुदत्तवर की धर्मकूट से, धर्मनाथ दुख कर्म हरे।
चैत्र पंचमी शुक्ला के दिन, सुखदायक निज धर्म वरे॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, धर्म धुरी पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-सुदत्तरवरकूटात् मुक्त श्रीधर्मनाथादि उन्तीस कोड़ाकोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पैसठ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१८. अविचल कूट

अविचलकूट टोंक से पाये, सुमतिनाथ पंचम गति को।
चैत्र शुक्ल ग्यारस हुई पावन, जब पायी निज परिणति को॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, हुये अचल अविचल आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-अविचलकूटात् मुक्त श्रीसुमतिनाथादि एक कोड़ाकोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सौ इक्यासी मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

१९. कुन्दप्रभ कूट

कूटकुन्दप्रभ से शांति प्रभु, ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस को।
राजचक्र तज धर्म चक्र धर, सिद्ध चक्र पा निज वश हो॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, महाशांति पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-कुंदप्रभकूटात् मुक्त श्रीशांतिनाथादि नौ कोड़ाकोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२०. महावीर कूट

पावापुर के पंकज वन से, शासननायक मुक्त हुये।

चढ़ा-चढ़ा निर्वाण लाडू हम, दीवाली से युक्त हुये॥
अनेक मुनि भी यहीं मुक्त हों, बन्धन मुक्त हुये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुर-सिद्धक्षेत्रात् मुक्त श्रीमहावीरजिनेन्द्रादि छब्बीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२१. प्रभास कूट

प्रभासकूट से सुपार्श्वप्रभु जी, फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को।
बाह्य लक्ष्मी तजकर पाये, अंतस आत्मलक्ष्मी को॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, सिद्ध सदन पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-प्रभासकूटात् मुक्त श्रीसुपार्श्वनाथादि उनंचास कोड़ाकोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ बयालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२२. सुवीर कूट

पूज्य सुवीर कूट से जिनवर, विमलनाथ प्रभु विमल हुये।
शुक्ल अष्टमी आषाढ़ी को, विभाव मल तज निकल हुये॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, सिद्धचक्र पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-सुवीरकूटात् मुक्त श्रीविमलनाथादि सत्तर कोड़ाकोड़ी साठ लाख छह हजार सात सौ बयालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२३. सिद्धवर कूट

पूज्य सिद्धवर कूट टोंक से, अजितनाथ शिवधाम गये।
चैत्र पंचमी शुक्ला के दिन, सुख स्वरूप निर्वाण गये॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, मृत्युंजयी हुये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-सिद्धवरकूटात् मुक्त श्रीअजितनाथादि अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२४. नेमिनाथ कूट

ऊर्जयन्त गिरनार कूट से, नेमिनाथ को सिद्धि मिली।
शुक्ल सप्तमी आषाढ़ी को, मुक्तिवधू की ऋद्धि मिली॥
शंबु आदि मुनि इसी कूट से, निजरमणी पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनारि-सिद्धक्षेत्र-ऊर्जयंतगिरिकूटात् मुक्त श्रीनेमिनाथ-शंबू-प्रद्युम्न-अनिरुद्धादि बहत्तर करोड़ सात सौ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

२५. सुवर्णभद्र कूट

सुवर्णभद्र कूट है अंतिम, जहाँ आत्म सोना होती।
श्रावण शुक्ल सप्तमी पाके, मोक्षसप्तमी नित होती॥
कोटि-कोटि मुनि इसी कूट से, पारस मणि पाये आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र-सुवर्णभद्रकूटात् मुक्त श्रीपार्श्वनाथादि बयासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ बयालीस मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

शाश्वत सिद्ध क्षेत्र है शाश्वत, कण-कण में कल्याण यहाँ।
तीन काल के तीर्थकरों के, होते हैं निर्वाण यहाँ॥
और यहाँ से तप करके जो, मोक्ष पधारे मुनि आहा।
अर्घ चढ़ा हम करें नमोस्तु, बोलें नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्रात् मुक्त असंख्यात मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय महार्घ्य

रहे एक सौ सत्तर पूरे, श्री सम्मेद शिखर अक्षय।
पाँचों तीर्थधाम या जो भी, सिद्धक्षेत्र निर्वाण निलय॥
अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी, कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-सदन।
तीन काल के तीन लोक के, भजें मोक्ष पाने भगवन॥

(दोहा)

वीतराग विज्ञान ही, हम भक्तों का पर्व।

करें नमोस्तु अर्घ ले, 'सुव्रत' बने अनर्घ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक-त्रिकाल संबंधिनः मुक्त अनंतानंत मुनिवरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

श्री सम्मेद शिखर यहाँ, गिरियों का गिरिराज।
कण-कण- पावन की कहें, जयमाला हम आज॥

(जोगीरासा)

जय हो! श्री सम्मेद शिखर की, जो निर्वाण धरा है।
तीर्थवंदना ऐसी जैसे, सिद्धालय उतरा है॥
जिसका यश सर्वत्र फैलकर, चुंबक जैसा खींचे।
अतः भक्त भी दर्शन करने, कभी न रहते पीछे॥१॥

किंतु वंदना कर ना सकें यदि, दर्शन ना मिल पाएँ।
तो भक्तों की श्रद्धा देखो, कभी नहीं घबराएँ॥
अपने जैन जिनालय में ही, रचा अर्चना प्यारी।
श्री सम्मेदशिखर की पूजा, करते मंगलकारी॥२॥

द्रव्य अर्चना भाव वंदना, करके पुण्य कमायें।
सिद्धपुरी के सिद्ध जिनों को, सिद्ध भक्ति कर ध्यायें॥
जो जो हैं निर्वाण भूमियाँ, इतनी अतिशयकारी।
जिनमें श्री सम्मेद शिखर की, महिमा सबसे न्यारी॥३॥

इसी अनादि तीर्थ के दर्शन, अहो! भाग्य भक्तों के।
करके तीर्थ वंदना होते, जन्म सफल भव्यों के॥
इस प्रभाव से उन्हें न मिलते, पचास भव भी पूरे।
वे उन्चास भवों में ही निज, कर्म शिलाएं चूरें॥४॥

फलतः अपनी निर्मल आतम उन्हें प्राप्त हो जाती।
जिससे मुक्तिवधू बाहों में, उनको सदा बुलाती॥
'सुव्रत' का अपना सपना कि, हमको मुक्ति बुलाये॥

सो सम्मेदशिखर के गुण गा, सिद्ध गुणों को ध्याये॥५॥

(सोरठा)

तीार्थराज सम्मेद, क्षेत्र शिखर जी पूजते।
कर्म शिला कर भेद, लोक शिखर हम खोजते॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्रात् मुक्त असंख्यात मुनिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मुक्ति प्राप्त मुनिवर करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, मुक्ति प्राप्त जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री सम्मेद शिखर जी स्तुति

(लय- माता तू दया...)

सम्मेदशिखर जी का, अभिनन्दन करते हैं।
श्रद्धा से नमोस्तु कर, हम वन्दन करते हैं॥
है शाश्वत तीर्थ यही, तीर्थंकर मोक्ष धरा।
निर्वाण भूमि न्यारी, कण-कण में धर्म भरा॥
हम सिद्धालय पाने, प्रभु दर्शन करते हैं।
श्रद्धा से...
यह तीर्थ निराला है, दे मोक्ष अनन्तों को।
संसार भ्रमण हरकर, दे आश्रय संतों को॥
इसकी रज लेकर के, चित पावन करते हैं।
श्रद्धा से....
यह तीर्थ वन्दना तो, बस भव्यों को मिलती।
इसकी पूजन करके, शुद्धातम सी खिलती॥
कर परिक्रमा इसकी, पुण्यार्जन करते हैं। श्रद्धा से...